RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल.-011/2021-23

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

वर्ष: 49, अंक : 49 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 5 मार्च , 2023

विक्रमी सम्वत् 2079, सृष्टि सम्वत् 1960853123

दयानन्दाब्द : 199 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–49, अंक : 49, 2-5 मार्च 2023 तदनुसार 21 फाल्गुण , सम्वत् 2079 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

सारा विश्व एक कुटुम्ब बन जाए

ले०-आचार्य ज्ञानेश्वरार्य

समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि।।

ऋग्वेद १०/१८१/३

शब्दार्थ-समानं = एक समान होना चाहिए, **मन्त्रः** = विचार, **समिति** = सभा, संगति, **समानी** = एक जैसी होनी चाहिए, **समानं मनः** = मन भी एक समान होने चाहिए और, **सहचित्तम् एषाम्** = इन सभा के व्यक्तियों की समझ भी एक जैसी होनी चाहिए, **वः** = तुम मनुष्यों को, **समानं** = एक समान ही, **मन्त्रम्** = वेद मन्त्र प्रदान करता हूँ और, **अभिमन्त्रये** = शुभ आशीर्वाद देता हूँ, **समानेन वः** = तुम सभी मनुष्यों को समान रूप से, **हविषा** = योग्य वस्तुएँ, **जुहोमि** = बनाकर देता हूँ।

भावार्थ-सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को बनाने वाला एक ही ईश्वर है, दो-चार, दस-बीस नहीं। उसी ने हम सभी मनुष्य आदि प्राणियों के भोग के लिए यह पृथ्वी तथा इसमें विद्यमान सभी वस्तुएँ बनाई हैं। वह ईश्वर सभी जीवों को सृष्टि के आदि में समान रूप से सूक्ष्म शरीर, मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ आदि बनाकर देता है। उसी ने सभी मनुष्यों को सृष्टि के प्रारम्भ में ही चारों वेदों का ज्ञान दिया और इसे सबको पढ़ने का भी अधिकार दिया। सूर्य, चन्द्रमा, धरती, समुद्र, नदियाँ, पहाड़, जंगल, वृक्ष, वनस्पति, अन्न, कन्द, मूल, फल आदि सभी मनुष्यों को बिना पक्षपात के समान रूप से भोगने को दिये हैं। ईश्वर की बनाई हुई इन सभी वस्तुओं को भोगने का सबका समान रूप से अधिकार है।

सभी मनुष्यों को समान रूप से प्रदत्त यह पृथ्वी तथा इसमें विद्यमान पदार्थों को कुछ स्वार्थी, चतुर, चालाक, बलशाली लोगों ने युद्ध करके झूठ, छल, कपट, हिंसा, भय, आतंक, अन्याय, पक्षपात आदि कुनीति का सहारा लेकर अधिग्रहित कर लिया। इतना ही नहीं इन्हीं छल, कपट, बल, भय, चालाकी आदि के माध्यम से अज्ञानी, भोले, सरल लोगों को पराधीन बनाया और उनका शोषण भी किया। धन, सम्पत्ति, साधन, सुविधाएँ, भोग, ऐश्वर्य सामग्री को अधिकाधिक प्राप्त करने के लिए न जाने क्या क्या अपराध, कुकर्म, किये। उनके इतिहास को पढ़, सुन, जान कर अत्यन्त लज्जा आती है, मन में रोष भी उत्पन्न होता है।

इस पृथ्वी के भोग्य पदार्थ, जिस पर सबका समान रूप से अधिकार है, कुछ स्वार्थी लोग येन केन प्रकारेण अधिकाधिक साधनों के स्वामी बनकर अन्यों की अपेक्षा अनेक गुणी भोग्य सामग्री का उपभोग करते हैं। जबकि दूसरी तरफ लाखों-करोड़ों व्यक्तियों की जीवन यापन की प्राथमिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं होती है। एक तरफ अत्यन्त ऐश्वर्य, भोग-विलास की सामग्री उपलब्ध है, बल्कि अपव्यय हो रहा है। दूसरी तरफ पेट की आग बुझाने के लिए भोजन, पानी, तन के नंगेपन को दूर करने के लिए वस्त्र तथा सर्दी-गर्मी-वर्षा से बचकर सोने के लिए छोटा सा प्रकोष्ठ भी उपलब्ध नहीं है, कहीं पर तो बच्चों को सुरक्षित, शिष्ट, सभ्य, योग्य नागरिक बनाने के लिए एक व्यक्ति पर लाखों रुपये खर्च होते हैं तो कहीं पर शिक्षा का कोई अवसर भी नहीं मिलता है।

आदिकालीन सत्य सनातन वैदिक धर्म की मान्यता यह है कि पृथ्वी पर सभी को समान रूप से भोग्य सामग्री तभी उपलब्ध हो सकती है जब सारे विश्व के लोग परस्पर मिलकर अपने अपने विचारों, सिद्धान्तों, मान्यताओं को रखें और उनमें जो सत्य हो, श्रेष्ठ हो, सबके लिए हितकारी हो वही स्वीकार करें।

जब तक विश्व में एक अखण्डित समस्त भूखण्डों का चक्रवर्ती साम्राज्य नहीं होगा, जब तक समस्त विश्व के मनुष्यों का एक संविधान, एक भाषा, एक ईश्वर, एक पूजा पद्धति, एक मन्त्र, एक अभिवादन, एक हानि-लाभ, एक शिक्षा प्रणाली, एक न्याय व्यवस्था नहीं होगी, जब तक विश्व के देशों की सीमायें नहीं मिटेंगी, सभी व्यक्ति एक दूसरे को अपना भाई-बहिन नहीं मानेंगे तब तक मनुष्य विश्व में पूर्ण शान्ति, सुख, निर्भीकता, स्वतंत्रता की अनुभूति नहीं कर सकेंगे।

यह संसार और इसमें रहने वाले मनुष्य १,८६,०८,५३,१२३ वर्ष पुराने हैं। ५००० वर्ष पूर्व तक सारा विश्व एक ही साम्राज्य था। अब भी हम तुच्छ स्वार्थ की भावनाओं से ऊपर उठकर, विशाल हृदय वाले बनकर परस्पर की घृणा, ऊँच-नीच का, रंग-रूप का, भाषा-भूषा का भेदभाव मिटाकर एक ईश्वर को अपना पिता मानकर सभी भाई-भाई बन जायें तो विश्व में पुनः स्वर्ग की स्थापना हो सकती है। यह कार्य कठिन अवश्य है परन्तु असाध्य नहीं है।

ईश्वर करे विश्व के सभी प्रबुद्ध धर्माचार्य, राज्याधिकारी, विद्वान्, विशिष्ट व्यक्ति इस ओर प्रयास करें और सारा विश्व एक कुटुम्ब बन जाये और सभी लोग समान रूप से उन्नति करें तथा वे सुख-शान्ति को प्राप्त करें। यही हमारी हार्दिक भावना है, जिसे ईश्वर पूरी करें।

कस्मै देवाय हविषा विधेम

ले.-शिवनारायण उपाध्याय दादावाड़ी कोटा, (राजस्थान)

जब मनुष्य यह जान लेता है कि इस सृष्टि का कोई निर्माता है, कोई अदृश्य शक्ति इसका सञ्चालन कर रही है, कोई नियामय शक्ति है जो इस सृष्टि का नियमन कर रही है। वह शक्ति ही सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का मुख्य कारण है। वह शक्ति अनादि, अनुपम, अनन्त, अजन्मा, सर्व व्यापक, सर्वज्ञ, सर्वाधार, सर्वेश्वर और सर्वान्तर्यामी है! वह अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र है। वही प्राणियों को उनके कर्मों के फलों को भुगताने वाली है। वह फल भुगताने में किसी की सलाह नहीं लेती है स्वाभाविक रूप से न्यायकारी है और कोई भी उसे अपना कार्य करने से बाधित नहीं कर सकता है वह तो सर्वशक्तिमान है। वह सच्चिदानन्द स्वरूप है। तब मनुष्य सोचता है कि मुझे उसे महान् शक्ति का आश्रय प्राप्त करना चाहिए। फिर मनुष्य शाश्वत सुख की चाहना करता है तो परमात्मा के 'सुख स्वरूप' रूप की उपासना करना पसन्द करता है। तभी वह कहता है, 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' अथर्ववेद काण्ड 4 सूक्त 2 में इसी का वर्णन हुआ है। इस सूक्त में कुल 8 मंत्र है और प्रत्येक के अन्त में 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' पद का प्रयोग हुआ है! हम वेद से ही इस पर मनन करते हैं।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।

योऽ३ स्येशे द्विपदो यश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।1।।

अर्थ-(यः) जो (आत्मदाः) आत्म ज्ञान का दाता (बलदाः) शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक बल का देने वाला, (यस्य) जिसकी (विश्व) सब (देवाः) विद्वान् लोग (उपासते) उपासना करते हैं (यस्य) और जिसका (प्रशिषम्) सत्य स्वरूप शासन स्वीकार करते हैं। (यः) जो (यः) व्यापक (अस्य) इस (द्विपदः) दोपाए और (चतुष्पदः) चौपाए जीव समूह का (ईशे) स्वामी है उस (कस्मै) सुख स्वरूप परमात्मा की (देवाय) श्रेष्ठ गुणों के लिए (हविषा) प्रेम के साथ (विधेम) हम भक्ति विशेष किया करें।

भावार्थ-जो परमेश्वर आत्म ज्ञान, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक बल का देने वाला है। जिस परमेश्वर की समस्त विद्वान् उपासना करते हैं और जिसके उत्तम शासन को स्वीकार करते हैं। जो परमेश्वर मनुष्यों और पशु, पक्षियों का एक मात्र स्वामी है। हम उस परमपिता परमेश्वर की अति प्रेम से भक्ति विशेष किया करें।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैको राजा जगतो बभूव।

यस्य छाया अमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।2।।

अर्थ-(यः) जो (महित्वा) अपनी महिमा से (प्राणतः) श्वास लेते हुए चेतन और (निमिषतः) अचेतन (जगतः) जगत् का (एकः) एक (राजा) राजा (बभूव) हुआ है। (यस्य) जिसकी (छाया) छाया (आश्रय वा ज्ञान) (अमृतम्) ही अमरपन है और (यस्य) जिसका (अनाश्रम वा अज्ञान) (मृत्युः) (जीवन की विफलता है) मरण है। उस (कस्मै) सुख स्वरूप परमेश्वर की (देवाय) श्रेष्ठ गुण के लिए (हविषा) अति प्रेम से (विधेम) विशेष भक्ति किया करें।

भावार्थ-जो परमेश्वर अपनी महिमा से प्राणी जगत् और अचेतन जगत् का एक मात्र स्वामी है। जिसका आश्रय ही मुक्ति का प्राप्त करना और जिसका अनाश्रय ही मृत्यु वा नरक प्राप्ति का कारण है। हम उस सुख स्वरूप परमात्मा की श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति के लिए अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें।

यं क्रन्दसी अवतश्चस्कभाने भियसाने रोदसी अह्वयेथाम्।

यस्या सौ पन्था रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।3।।

अर्थ-(यम्) जिसको (चस्कभाने) परस्पर रोकती हुई (क्रन्दसी) ललकारती हुई दो सेनाएं (अवतः) प्राप्त होती है और (जिसको) (भियमाने) हे डरती हुई (रोदसी) सूर्य और पृथ्वी (अह्वयेथाम्) तुम दोनों ने पुकारा है (यस्य) जिसका (असौ पन्था) यह मार्ग (रजसः) संसार का (विमानः) विविध प्रकार नापने वाला वा विमान रूप है उस (कस्मै) सुख स्वरूप परमात्मा की (देवाय) उत्तम गुणों के लिए (हविषा) अति प्रेम से (विधेम) हम विशेष भक्ति किया करें।

भावार्थ-उस परमेश्वर ही को दो परस्पर लड़ती हुई सेनाएं सहायतार्थ पुकारती हैं। उसकी आज्ञा में सूर्य, पृथ्वी आदि लोक रहते हैं। हमें उस सुख स्वरूप परमात्मा की श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति के लिए अतिप्रेम से भक्ति करनी चाहिए।

यस्य द्यौरूर्वी पृथिवी च मही यस्याद उर्वन्तरिक्षम्।

यस्यासौ सूरो विततो महित्वा कस्मै देवाय हविषा विधेम।।4।।

अर्थ-(यस्य) जिसकी (महित्वा) महिमा से (उर्वी) विस्तीर्ण (द्यौः) सूर्य (च) और (महि) विशाल (पृथिवी) पृथ्वी है (यस्य) जिसकी (महिमा) (अदः) यह (उरू) चौड़ा (अन्तरिक्ष) मध्य लोक है (यस्य) जिसकी (महिमा से) (असौ) यह (सूरः) धर्म प्रचारक परमात्मा की (देवाय) श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति के लिए (हविषा) अति प्रेम से (विधेम) हम विशेष भक्ति किया करें।

भावार्थ-जिस परमेश्वर ने अपनी महिमा से विस्तीर्ण सूर्य और पृथ्वी आदि लोकान्तर परस्पर आकर्षण द्वारा स्थिर किए हैं। जिस परमेश्वर ने मनुष्य को अद्भुत शक्तियों से सुसज्जित किया हुआ है। हम लोग उस सुख स्वरूप परमात्मा की श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति के लिए अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें।

यश्य विश्वे हिमवन्तो महित्वा समुद्रे यस्य रसामिदाहुः।

इमाश्च प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम।।5।।

अर्थ-(यस्य) जिसकी (महित्वा) महिमा से (विश्वे) सब (हिमवन्तः) बर्फ से ढके पर्वत हैं और (यस्य) जिसकी (महिमा से) (समुद्रे) समुद्र (अन्तरिक्षवा पार्थिव समुद्र) में (रसाम्) नदी को (इत्) भी (आहु) बताते हैं। (च) और (इमा) यह (प्रदिशः) बड़ी दिशाएं (यस्य) जिसकी (बाहूः) दो भुजाएं है उस (कस्मै) सुख स्वरूप परमात्मा की (देवाय) श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति के लिए (हविषा) अति प्रेम से (विधेम) हम विशेष भक्ति करें।

भावार्थ-जिसकी महिमा से बर्फीले पहाड़, अन्तरिक्ष तथा विशाल समुद्र जिसमें नदियां स्थान पाती हैं स्थिर हैं। विस्तीर्ण दिशाएं जिसकी दो भुजाओं के समान है उस सुख स्वरूप परमात्मा की हम लोग अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें।

आपो अग्रे विश्वमावन् गर्भं दधाना अमृता ऋतज्ञाः।

यासु देवीष्वधि देव आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम।।6।।

अर्थ-(गर्भम्) बीज को (दधानाः) धारण करते हुए (अमृताः) मरण रहित (ऋतज्ञाः) सत्य नियम जानने वाले (आपः) उन व्यापक जलों ने (अग्रे) पहिले (विश्वम्) जगत् की (आवन्) रक्षा की थी (याशु, देवेषु अधि) जिन दिव्य गुण वालों की प्राप्ति के लिए (हविषा) अति प्रेम से (विधेम) हम विशेष भक्ति करें।

भावार्थ-सृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वर के नियम से जल के भीतर जगत् का बीज और जीवन का सामर्थ्य था। उसी से यह सृष्टि बनी है। ऐसे (कस्मै) सुख स्वरूप परमात्मा की श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति हेतु हम उसकी अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें।

हिरण्यगर्भः समवर्ततात्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीमुत द्यां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।7।।

(हिरण्यगर्भः) अग्नि स्वरूप लोकों का आधार (अग्रे) पहले ही पहले, सृष्टि उत्पत्ति के पूर्व (सम्) ठीक ठीक (अवर्तत्) वर्तमान था। वही (जातः) प्रकट होकर (भूतस्य) पृथ्वी आदि पंचभूत का (एक) एक, अकेला (पतिः) स्वामी (आसीत्) हुआ। (सः) उसने (पृथिवीम्) पृथ्वी (उत) और (द्याम्) सूर्य को (दाधार) धारण किया, उस (कस्मै) सुख स्वरूप परमात्मा की (देवाय) श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति के लिए (हविषा) अति प्रेम से (विधेम) हम भक्ति करें।

आपो वत्सं जनयन्तीर्गर्भमग्रे समैरयन।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय 6 मार्च को बलिदान दिवस पर विशेष.....

आर्य समाज के महाधन–पं. लेखराम जी

वैदिक धर्म और आर्य समाज वस्तुतः धर्म विषयक दिग्विजयी विचारधारा है और इसके अनुयायी अपना रक्त व प्राण देकर इसकी रक्षा करते रहे हैं। ऐसे ही एक अनुयायी आर्य समाज के महाधन पंडित लेखराम जी का शहीदी दिवस 6 मार्च को है। पंडित लेखराम जी ने ऋषि दयानन्द जी के बताये मार्ग पर चल कर वैदिक धर्म की प्रशंसनीय सेवा की है। आर्य समाज को इस बात का सौभाग्य प्राप्त है कि उसने अपने धर्म की रक्षा के लिए सबसे ज्यादा शहीद पैदा किये। पं. लेखराम जी भी अपने धर्म के लिए मर मिटने वाले वीर थे। उन्होंने अपने बलिदान से आर्य समाज को एक नई प्रेरणा दी। पं. लेखराम जी का स्मरण कर उनके प्रति श्रद्धा और आदर से मस्तक सदैव झुक जाता है। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए उनकी अनवरत, अटूट श्रद्धा और पौराणिक, मुस्लिम और ईसाई मतों के आक्रमण का प्रबल प्रतिरोध ही उनके जीवन का स्वरूप था। अपने इसी जीवन की पूर्ति के लिए वे जीवन भर संघर्ष करते रहे और अन्त में अपना जीवन बलिदान कर गए। गीता में श्रीकृष्ण जी महाराज ने भी कहा है कि **स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः** अर्थात् अपने धर्म के लिए मर मिटना भी कल्याणकारी होता है, दूसरों का धर्म भय देने वाला होता है। गीता की इन्हीं पंक्तियों का अनुसरण करने वाले हमारे नायक धर्मवीर पं. लेखराम जी आर्य मुसाफिर थे। पं. लेखराम जी आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के पक्के अनुयायी थे। अपने धर्म के प्रति उनके अन्दर अपार निष्ठा थी और श्रद्धा थी।

पं. लेखराम जी का जन्म जेहलम जिले के एक ग्राम सैदपुर में हुआ था। बाल्याकाल में पं. लेखराम का अध्ययन फारसी एवं उर्दू के माध्यम से हुआ। सामान्य शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात वे सत्रह वर्ष की आयु में पुलिस में भर्ती हो गए। इस विभाग में उन्नति करते-करते वे सार्जेंट के पद तक पहुंच गए। पुलिस की सेवा करते-करते पं. लेखराम जी को आर्य समाज का प्रकाश मिला। इससे वे इतने प्रभावित हुए कि सरकारी सेवा को लात मार कर आर्य समाज के प्रचारक बन गए। उर्दू और फारसी का ज्ञान तो था ही परन्तु इन्होंने हिन्दी और संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अभ्यास शुरू कर दिया। तत्पश्चात वैदिक ग्रन्थों के गम्भीर स्वाध्याय ने आपकी योग्यता को चार चांद लगाए। पं. लेखराम ने कुरानशरीफ का अध्ययन तो तन्मयता से किया था किन्तु बाईबल तथा अन्य मतावलम्बी सिद्धान्त ग्रन्थों का भी तुलनात्मक अध्ययन किया। उस अध्ययन के निष्कर्ष को जन साधारण तक पहुंचाने के लिए उसे लेखबद्ध किया और उन सब लेखों और पुस्तकों का संग्रह करके पुस्तकाकार में छपवा कर उस पुस्तक का नाम कुलियात आर्य मुसाफिर रखा जो उस अमर शहीद की योग्यता तथा अनुभव का प्रतीक है। पंडित लेखराम जी ने अपने नाम के अनुरूप लेखन का कार्य किया। आपने छोटी-बड़ी लगभग 33 पुस्तकें लिखी हैं।

अमर शहीद पं. लेखराम जी एक अत्यन्त प्रतिभाशाली वक्ता एवं अन्वेषक थे। प्रत्येक घटना तथा घटना की गहराई तक पहुंचना उनका एक विशेष गुण था। इस अन्वेषण के कार्य के लिए उन्हें विभिन्न स्थानों पर अनेकों बार आना-जाना पड़ा। प्रचार तथा शास्त्रार्थ के उद्देश्य से वे निरन्तर अपने बलिदान तक इधर-उधर भ्रमण करते रहे। इसी कारण पं. लेखराम जी का नाम आर्य पथिक अथवा आर्य मुसाफिर पड़ गया। इस्लाम से सम्बन्धित सब सम्प्रदायों से इनके शास्त्रार्थ हुआ करते थे किन्तु मिजाई मतावलम्बियों से इनकी अनेक टक्करें होती रहीं। मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी विशेष रूप से इनसे चिढ़ते थे क्योंकि पं. लेखराम ने अहमदिया सम्प्रदाय और उसके स्वयंभू पैगम्बर को अपनी आलोचना का लक्ष्य बनाया था। इस सम्प्रदाय की मान्यताओं के खण्ड़न में उन्होंने अनेक ग्रन्थ निकाले। मिर्जा साहिब ने अमर शहीद को आतंकित करने के लिए कई अवैध और घृणित साधनों को अपनाया किन्तु यह साहसी वीर एक बार लगभग एक मास तक मिर्जा साहिब के गढ़ कादियां में दहाड़ता रहा। मिर्जा साहिब के सारे इलहाम और भविष्यवाणियों की पोले खुली तो वे ऐसे दयानन्द भक्त, धर्मप्रेमी को सहन न कर सके। एक कायर और कृतघ्न व्यक्ति जो शुद्ध होने के बहाने से उनके पास लाहौर भेज दिया, जिसने अवसर पाते ही इस अमर शहीद को अंगड़ाई लेते समय उनकी छाती में छुरा घोंप दिया। महर्षि दयानन्द के पश्चात यह आर्य समाज का दूसरा बलिदान था।

पंडित लेखराम जी ने अजमेर में ऋषि दयानन्द जी के दर्शन किये थे। ऋषि के दर्शन पर आप तृप्त व आनन्दित हुये थे। आप ने ऋषि जी से कुछ प्रश्न किये। एक प्रश्न था कि आकाश और ब्रह्म दोनों व्यापक हैं। दोनों व्यापक सत्ताएं एक स्थान पर एक साथ कैसे रह सकती हैं? स्वामी दयानन्द जी ने इस प्रश्न को समझाने के लिये भूमि से एक पत्थर उठाया और पंडित लेखराम जी को दिखा कर कहा कि देखों इसमें अग्नि व परमात्मा व्यापक है या नहीं? इसका उत्तर हां में था। उन्होंने कहा कि बात वास्तव में यह है कि जो वस्तु जिसमें सूक्ष्म होती है वह उसी वस्तुतः में व्यापक हो सकती है। स्वामी दयानन्द का यह समाधान सुनकर पंडित लेखराम जी को बहुत आनन्द महसूस हुआ और इसके बाद वह आर्य समाज के होकर रह गये। पण्डित लेखराम जी ने मरते समय आर्य समाज के नाम एक सन्देश दिया कि आर्य समाज से तहरीर और तकरीर का काम बंद नहीं होना चाहिए। इस प्रकार अमर शहीद के गुणों का कहां तक वर्णन करें। प्रचार के कार्य के लिए चलती हुई गाड़ी से अपने जीवन की ममता को छोड़ कर छलांग लगाना, अपनी पति परायण पत्नी और स्नेहशील माता से निस्पृह होकर प्रचार कार्य में जुटे रहना, अपने एकाकी मरणासन्न पुत्र को रूग्णावस्था में छोड़ कर अपनी जाति के सैंकडों लोगों को बचाने के लिए चले जाना, यह घटनाएं तो उनके धर्म धुनी जीवन की साधारण घटनाएं बन गई थी। जब एकाकी पुत्र के परलोक गमन का तार उन्हें मिला तो यह कहना कि बच्चे की चिन्ता से मुझे मुक्त करने और जाति की सेवा में अधिक तत्परता से सन्नद्ध होने के लिए मेरे प्रभु ने स्वयं दायित्व सम्भाल लिया।

पं. लेखराम जी महर्षि दयानन्द के अनुयायी थे। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करने के लिए उन्होंने रात-दिन एक किया। अपने जीवन की, अपने परिवार की परवाह न करते हुए जहां पर भी, जिस समय भी उनकी आवश्यकता महसूस की गई तुरन्त सभी कार्यों को छोड़कर वहां पहुंचना उनकी धर्म के लिए अपार निष्ठा को दिखाता है। जिस जाति में, जिस धर्म में ऐसे धर्मनिष्ठ और वीर पुरूष होते हैं वही धर्म व जाति उन्नति करता है। आर्य समाज का यह सौभाग्य था कि उसे पं. लेखराम जैसा धुन का धनी व्यक्ति मिला। महर्षि दयानन्द जी ने जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी, उन्हें पूरा करने के लिए पं. लेखराम जी ने अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया।

6 मार्च को पं. लेखराम जी का शहीदी दिवस है। उन्होंने महर्षि दयानन्द की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए जो कार्य किये हैं, वे सभी हमारे लिए प्रेरणादायक हैं। शहीदों का जीवन हमें एक ही शिक्षा देता है कि जब एक व्यक्ति अपने सामने एक लक्ष्य रख लेता है तो उसका यह भी कर्त्तव्य हो जाता है कि उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह जो कुछ भी कर सकता है, करे। धर्मवीर पं. लेखराम की तरह बलिदान भी देना पड़े तो वह भी दें। पं. लेखराम जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में यही किया था। वे अपने सुखों को त्याग कर हमेशा धर्म के मार्ग पर चलते रहे। शहीदी दिवस तो हर वर्ष आता है और आ करके चला जाता है। परन्तु हमें विचार करना है कि हम अपने लक्ष्य और उद्देश्य में कहां तक सफल हुए हैं। हमने पं. लेखराम जी के जीवन से क्या शिक्षा ग्रहण की है? इस पर हमें विचार करना है। हमारे शहीदों का बलिदान हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिन उद्देश्यों के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी, जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पं. लेखराम ने अपना बलिदान दिया था। उन महापुरूषों के बलिदान और कार्यों को व्यर्थ न जाने दें। आर्य समाज एक ऐसे वृक्ष के समान है जिसे अनेक बलिदानियों ने अपने बलिदान से तथा अनेक महापुरूषों ने अपनी प्रेरणाओं से सींचा है। आज हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि हम भी कुछ ऐसे कार्य करें कि आने वाली पीढ़ियां हमें भी याद करें। पं. लेखराम के बलिदान दिवस से प्रेरणा लेकर यदि हम आगे बढ़ सकें तो यही उन्हें हमारी सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

प्रेम कुमार
संपादक एवं सभा महामन्त्री

शिवरात्रि-कल्याणी रात्रि-बोध रात्रि

ले.-डा. सुशील वर्मा फाजिल्का

ऐसा ऐतिहासिक महापुरुष जिसमें सभी दिव्यगुण स्फुरित होते दिखाई दे रहे हैं। महर्षि कपिल, कणाद तथा गौतम का पाण्डित्य भीष्म पितामह सा ब्रह्मचर्य, भीम जैसा बल, बुद्ध जैसी अध्यात्म की पराकाष्ठा, हरिश्चन्द्र समान सत्य निष्ठा, सभी गुण एक ही पुरुष में समाहित हो गए हों, वह महामानव, देवत्व गुणों से अलंकृत महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से जाना जाता है। ऐसे युग प्रवर्तक, महान विभूति से देश गौरवान्वित होता है परन्तु अफसोस ऐसे ऐतिहासिक पुरुष को इतिहास में वह उचित स्थान नहीं दिया गया क्योंकि इससे स्वार्थी राजनीतिज्ञों का व्यक्तित्व नग्न होने की सम्भावना अधिक रही। जिस व्यक्ति ने ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'', कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, ''वसुधैव कुटुम्बकम'' वेदों की ओर लौट चलो'' का उद्घोष किया हो; जिसने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के कुल नायकों में से 85-90 प्रतिशत को अपनी विचारधारा से प्रभावित किया हो, जिसने सबसे प्रथम स्वराज्य व स्वतन्त्रता का आह्वान किया हो स्त्री व शूद्रों को शिक्षा का अधिकार दिलाने का साहस किया हो, ऐसे महापुरुष को कैसे भुलाया जा सकता है। इसी महापुरुष द्वारा वेदों के प्रति जागरुकता, उन की सार्थकता को विश्व में उस समय स्थापित किया जब विदेशी तथाकथित विद्वानों ने वेदों को 'गड़रियों के गीत' कह कर तिरस्कृत किया।

ये सभी गुण एक ही दिन में प्राप्त नहीं हुए। मूलशंकर से महर्षि दयानन्द का सफर एक लम्बा सफर है, अथवा तो यूँ कहिए कि पूरे जीवन को आहुत करने का सफर है। धन्य वह रात्रि जिसे आज भी लोग शिवरात्रि के नाम से पूजा पाठ से अधिक कोई महत्त्व नहीं देते। परन्तु मूलशंकर के लिए वह शिवरात्रि अर्थात् कल्याण की रात्रि थी। क्योंकि उस बालक के पिता श्री शिवभक्त थे। यह उनका उपकार था कि उन्होंने अपने बालक को यजुर्वेद बाल्यावस्था में ही कण्ठस्थ करवा दिया था। क्योंकि पिता जी औदीच्च ब्राह्मण थे इसलिए गायत्री, यजुर्वेद के साथ ही अन्य वेदों के कुछ अंश, व्याकरण आदि के संस्कार बचपन में ही डाल दिए थे।

इस संस्कारित बालक में आत्मा का जागरण उस समय हुआ जब पिता की आज्ञानुसार शिवरात्रि का व्रत रख लिया। उस समय उस बालक मूलशंकर की आयु मात्र 14 वर्ष की थी। चूहों द्वारा शिवपिण्डी पर उछलकूद का नजारा देख शिव महात्मय का विशाल भवन धराशायी हो गया। मूर्ति पूजा की आस्था यही से विध्वंस हो गई। शिव पिण्डी का चूहों का दृश्य उसे बार, बार झंकोरता रहा कि क्या यही शिव है? दुनिया जिसे महादेव कहती है। जो अपनी रक्षा स्वयं नहीं कर सकता वह संसार की कैसे रक्षा करेगा? परिणामतः जीवन भर के लिए इस पूजा पद्धति से हमेशा हमेशा के लिए नाता तोड़ लिया। फिर बड़े से बड़े प्रलोभन, भय और आपत्ति भी उसका मस्तक मूर्ति के समक्ष न झुका सकी। क्योंकि आत्मग्नि प्रज्जलित हो चुकी थी। क्योंकि आत्मग्नि के चेतन हो जाने पर पाप रूपी अथवा अज्ञानरूपी कृष्ण धूम भागता हुआ दृष्टिगोचर होता है। साधक जब ''उद्बुध्यस्वाग्ने'' पुकारता है तो आत्मा जागृत हो जाती है। शिवरात्रि की घटना के कुछ समय पश्चात ही बहिन तथा चाचा की मृत्यु से वैराग्य अग्नि ने प्रचण्ड रूप धारण कर लिया था। वैराग्य ग्रस्त वह बालक ईष्ट मित्रों से प्रभु दर्शन, मोक्ष प्राप्ति और मृत्युञ्जय बनने के उपाय पूछता रहा। अन्ततः घर का त्याग कर दिया। तत्पश्चात नैष्टिक ब्रह्मचारी की दीक्षा प्राप्त कर शुद्ध चैतन्य नाम पाया। 1847 ई. में स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास दीक्षा ग्रहण कर दयानन्द सरस्वती नाम धराया। परमपिता परमात्मा की जब अनुकम्पा होती है तो 'उद्बुध्यस्वाग्ने' का आदेश प्राप्त होता है और फिर आत्मा जागृत हो जाती है। इसी प्रक्रिया को कठोपनिषद के शब्दों में

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुनाश्रुतेन।

यमैवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनु-स्वाय।।

संन्यास लेने के पश्चात भी उन का रास्ता आसान न था। पाखण्डियों व धूर्त लोगों से प्रताड़ित होते रहे। दुर्गम से दुर्गम स्थानों का भ्रमण करते रहे, कई बार तो जीवन लीला समाप्त होने को आई परन्तु नियति तो उन्हें उत्कृष्ट मार्ग पर ले जाने का मार्ग प्रशस्त कर रही थी। अन्ततोगत्वा 1855 ई. में अपने गुरु से विद्याध्ययन की इच्छा प्रकट की तो उनका उत्तर था कि मथुरा जाओ और गुरु विरजानन्द से शिक्षा ग्रहण करो। तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा।

1860 में मथुरा निवासी गुरु विरजानन्द के चरणों में नतमस्तक हुए। 1860 से 1863 तक दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द से शिक्षा ग्रहण की। उसके बाद के समय में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जितने व्याख्यान दिए, जितने शास्त्रार्थ किए, जितने ग्रन्थों की रचना की वह इन तीन वर्षों के अध्ययन, कठिन परिश्रम व गुरु की विद्वता का ही परिणाम था। उनके तीन वर्षों के अध्ययन ने उनके जीवन, उनकी विचारधारा में जो क्रान्ति उत्पन्न कर दी वह भारत के पिछले सौ वर्षों का इतिहास बन गया। इस क्रान्ति का मूलस्रोत उनका कालजयी ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' था। यह एक ऐसा ग्रन्थ था जिसकी रचना में तीन मास 15 दिन लगे। आश्चर्यजनक बात यह है कि इस पुस्तक में 377 ग्रन्थों का प्रमाण है 1542 वेद मन्त्रों व श्लोकों का उद्धरण है। चारों वेद, उपनिषदों षड्दर्शनों, स्मृतियाँ, गृह्यसूत्र, जैन, बौद्ध, बाईबल, कुरान आदि ग्रन्थों का विवरण यहाँ प्राप्य है। गुरु दक्षिणा के समय गुरु के वे वचन ''संसार अज्ञान की निद्रा में सो रहा है, उसे जगाओ, वेद के सूर्य को फिर से चमकाकर संसार को सुखी बनाओ'' का प्रतिपालन करते हुए अपने जीवन को आहुत कर दिया।

आज हम जिस ऋषि को आर्षग्रन्थों के तलस्पर्शी ज्ञाता व्याकरण का प्रकाण्ड पंडित, अनाथ, विधवा, मातृशक्ति का उद्धारक स्वदेशी, स्वराज्य व स्वभाषा का पोषक, वेदों के वास्तविक अर्थों का प्रकाशक एवं प्रचारक तथा भारतीय संस्कृति का रक्षक व पोषक स्वीकार करते हैं उसे यहाँ तक पहुँचाने के लिए उस महान व्यक्ति को 17 बार विषपान करना पड़ा आज शिवरात्रि पर्व पर हम उस दिव्य आत्मा को स्मरण कर रहे हैं। जिसे यही शिवरात्रि को कल्याणी रात्रि एवं बोध रात्रि कहलाने को एक कठिन यात्रा तय करनी पड़ी। आर्य समाज की स्थापना कर समाज में एक नई जागृति का संचार किया। पाखण्डों एवं अन्धविश्वासों के प्रतिकूलता वेदों के वास्तविक रूप को स्थापित करने, सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह, नारी व शूद्रों को शिक्षा का अधिकार दिलाने स्वराज्य व वैदिक परम्पराओं को पुनः स्थापित करने व अन्य सामाजिक कार्यों के प्रति उनकी प्राथमिकता ही उन्हें स्वामी दयानन्द के नाम की सार्थकता प्रदान करती है। आर्य समाज विचार है, जीने की कला है, मानवता का सन्देश है। वेदों की ओर लौटने की पुकार है। भाग्यवाद पर पुरुषार्थवाद की विजय है। मनुष्य से देवत्व की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा है। दुर्गुण, दुर्व्यसनों एवं दुःखों से छूटने की संजीवनी ही यही है देवदयानन्द की सोच, उनकी उत्कृष्ट विचारधारा। शिवरात्रि को कल्याणमयी रात्रि बनाने का यही पथ है जिस पर अनुगामी होने का हमें संकल्प लेना है। अपनी सभ्यता, संस्कृति की सरंक्षण का यही उच्चतम मार्ग है। ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम'' का उद्घोष ही स्वामी जी का आदर्श है जिसे हमने अपनाना एवं प्रसारित करना है।

वेदों के ऋषि

ले.-श्री पं० रामावतार जी तीर्थचतुष्टय

घोरा ऋषयो नमो अस्त्वेभ्य श्चक्षुयदेषाम्मनसश्च सत्यम्।

बृहस्पतये महिष द्युमन्नमो विश्वकर्मन्नमस्ते पाह्यस्मान्।।

अथर्व० २।३५।४

भारत का भूतकाल बड़ा ही गौरवपूर्ण था। इसकी गुरुता का कारण ''ऋषिपरम्परा'' का अबाध गति से प्रवाह चलता रहना ही कहना चाहिये।

भारत की धर्मप्राण जनता को निरन्तर उन ऋषियों के द्वारा उदात्त भावना का उपदेश प्राप्त होने में कोई बाधा नहीं पहुँची थी। ऋषियों को भी अपने तप और त्याग पर पूर्ण भरोसा और अटल विश्वास था। तब लोग कहा करते थे कि-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशा-दग्रजन्मनः।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।। मनुस्मृति

अर्थात् भारत में उत्पन्न होने वाले ऋषियों से, विश्व के मानव को अपने अपने चरित्र की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये।

ऋषि-परम्परा का प्रारम्भ वेदों अथवा वेद-मन्त्रों से होता है। इस परम्परा को मानव-जीवन ने तप और त्याग के द्वारा अपना कर मानव समाज को महान् लाभ पहुँचाया है। उस परोपकार से विश्व अब तक उपकृत होता जा रहा है। सूर्य, चन्द्रमा और तारायें जब तक विद्यमान रहेंगी, तब तक निःसन्देह मानव समाज लाभान्वित होता रहेगा।

हमने ऋषि शब्द के ऊनविंश प्रकार के अर्थ मन्त्रों तथा अन्यान्य विचारों के आधार पर अन्यत्र कर दिये हैं।

प्रारम्भ में मंगलाचरण के रूप में अथर्ववेद का एक मन्त्र हमने उपस्थित किया है। उस मन्त्र में इन्द्रियों को ऋषि कहा गया है। इन्द्रियों को ऋषि कहते हुए मन्त्र ने कहा कि ''**चक्षुर्यदेषाम्मनसश्च सत्यम्**'' इन इन्द्रियों में मन से भी सच्चा आंखें हैं। मन से बढ़कर आंखों को सत्य कहने का तात्पर्य यह है कि आँख से प्रत्यक्ष हो जाने पर अन्य प्रमाणों की आवश्यकता शेष नहीं रहती है। इसलिये मन्त्र ने मन से बढ़कर आँख को सत्य के रूप में व्यक्त किया है।

अथर्ववेद के निम्न सूक्त से इस विषय पर पूर्ण प्रकाश पड़ता है।

मनसे चेतसे धिय आकूतय उत चित्तये।

मत्यै श्रुताय चक्षसे विधेम हविषा वयम्।।१।।

अपनाय व्यानाय प्राणाय भूरिधायसे।

सरस्वत्या उरुव्यचे विधेम हविषा वयम्।।२।।

मा नो हासिषुर्ऋषयो दैव्या

ये तनूपा ये नस्तन्वस्तनूजाः।

अमर्त्या मर्त्याँ अभिनः सचध्वम्

आयुधैत्त प्रतरं जीवसे नः।।३।।

अथर्व ६।४१

अथर्ववेद के इस सूक्त में मन, चेतना, बुद्धि, आकूति, चित्त, मति, श्रुति=कान, वाणी, प्राण, अपान, व्यान, और सरस्वती आदि सब के सब ऋषि कहे गये हैं। सूक्त के अन्तिम मन्त्र में यहाँ तक कह डाला गया है कि जो दैवीशक्ति के रुप में हमारे शरीरों की रक्षा करने वाले ऋषि हैं, और जो हमारे शरीर से ही उत्पन्न होने वाले ऋषि हैं, जिनको हम अमर्त्य=नहीं मरने वाले और मर्त्य=मरने वाले भी कह सकते हैं, वे सब के सब हमारे जी ने के लिये आयु प्रदान करें।

तात्पर्य यह कि पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड दोनों में विहार करने वाले ऋषि होते हैं। किन्तु वेद ही ऋषि और नाम के प्रवर्तक होते हैं।

ऋषि शब्द यौगिक और अनेकार्थक हैं। वेद-मन्त्रों की जैसी परिस्थिति होती है, उसके अनुसार इस पद का अर्थ हो जाया करता है। वेद-मन्त्रों के पद नित्य अर्थ का ही प्रतिपादन करते हैं, अनित्य अर्थ का नहीं। आगे के विचारों से यही बात सिद्ध की जावेगी।

वेदों के अध्ययन करने से, तीन स्थानों में तीन प्रकार के नाम पाये जाते हैं, जिनको वेदों का ऋषि कहा जाता है।

१. पहले प्रकार के ऋषि वे हैं, जिनके केवल नाम ही नाम मिलते हैं; परन्तु वेद मन्त्रों से उनका सीधा सम्बन्ध नहीं होता है। वेद-मन्त्रों के ऊपर उनके नाम लिखे वा छपे हुए पाये जाते हैं। मन्त्रों के भीतर उनके नाम नहीं होते हैं।

२. दूसरे प्रकार के ऋषि वे हैं, जिनके नाम वेद-मन्त्रों के ऊपर छपे हुए हैं, किन्तु वे ही नाम मन्त्रों में भी पाये जाते हैं।

३. तीसरे प्रकार के ऋषि वे हैं, जिनके नाम देवता के नाम के समान ही पाये जाते हैं।

दूसरे प्रकार के नामों के विषय में अपने विचार हम आगे उपस्थित करेंगे। सबसे प्रथम जो नाम केवल वेद मन्त्रों के अन्दर देवता से भिन्न रूप में छपे हुए पाये जाते हैं, उन्हीं के विषय में अपना विचार व्यक्त करना है।

निरुक्त के अध्ययन से ज्ञात होता है कि साक्षात् कृत-धर्मा ऋषि होता है। यास्क आचार्य ने लिखा है कि- ''**साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः। ते असाक्षात्-कृद्भ्याऽवरेभ्यो मन्त्रान्सम्प्रादुः।**'' अर्थात् धर्म के तत्त्व को जानने वाले ऋषि हुए। उन्होंने अपने समय के बाद उत्पन्न होने वालों को मन्त्रों का उपदेश किया। जिनको ऋषियों ने उपदेश दिया, वे लोग ऐसे थे जिनको धर्म का कुछ भी ज्ञान नहीं था।

वे ऋषि ऐसे थे जिनको मन्त्रों का दर्शन हो चुका था। तब अपनी ओर से उन्होंने मन्त्रों का सम्प्रदान किया।

मन्त्रों को जानने वालों की दो श्रेणियाँ हो सकती हैं। एक वह हो सकती है जिन्होंने मन्त्रों को साक्षात् किया था। दूसरी उनकी हो सकती है जिन्होंने मन्त्रों का दर्शन तो नहीं किया हो किन्तु गुरु परम्परा से वेदों का अध्ययन कर लिया हो। ऐसी श्रेणी का दर्शन आज भी हो रहा है। मन्त्रों के सम्प्रदान के विषय में दोनों प्रकार के ऋषियों के नाम लिये जा सकते हैं।

वर्तमान लेख में हम केवल कुछ नामों का विश्लेषण करना चाहते हैं, जिनसे उन उन तत्सम पदों के अर्थों का पूर्ण परिज्ञान हो जाए। ऐसा करने से वास्तविकता के बहुत समीप हम पहुँच सकते हैं।

सबसे प्रथम सप्तर्षि मण्डल के ऋषियों को उपस्थित कर हम उनके विवरण का विचार करते हैं।

१. भरद्वाज

भरद्वाज ऋषि का व्याख्यान यजुर्वेद के निम्न मन्त्र में मिलता है।

भरद्वाज ऋषिः गृहीतया त्वया मनोगृह्णामि प्रजाभ्यः।। य० १३।५५।

भरद्वाज ऋषिः= बिभर्तीति भरत्, बाजम्=अन्नम् यः स भरद्वाजः। अन्नधर्ता मनः।

जो अन्न को धारण अथवा पुष्ट करे वह भरद्वाज है। अन्न को मन धारण करता है इसीलिये मन भरद्वाज है।

उपपत्ति-मनसि स्वस्थेऽन्नाद-नेच्छोत्पत्तः। मन को भरद्वाज इसलिये कहना पड़ता है कि मन के स्वस्थ रहने पर ही अन्न खाने की इच्छा हुआ करती है। मन यदि स्वस्थ न हो तो अन्न खाने की इच्छा नहीं होती।

प्रमाण-मनो वै भरद्वाज ऋषिः अन्नं वाजो यो वै मनो विभर्त्ति, सोऽन्नं वाजं भरति तस्मान् मनो भरद्वाज ऋषिः। तै० ८।१।१।९।

निश्चय ही मन भरद्वाज ऋषि है। क्योंकि वाज का अर्थ अन्न है। जिस वस्तु को मन धारण करता है वह अन्न ही है, इसलिये मन भरद्वाज ऋषि है।

यह प्रमाण किसी अन्य को भरद्वाज मानने का निषेध तो नहीं करता है किन्तु निश्चय रूप से मन को भरद्वाज कहता है।

मन्त्र ने यह कहा कि मन को ग्रहण करता हूँ कि प्रजाओं की भलाई हो। अथवा यों कहना चाहिये कि प्रजाओं के लिये ही मन का ग्रहण होता है, मन्त्र की दृष्टि में भरद्वाज कोई दूसरा द्रव्य नहीं है।

ऋग्वेद का भी एक मन्त्र उपस्थित कर हम इस विषय को और भी स्पष्ट करने का प्रयत्न करते हैं।

भरद्वाजवद्विधते मघोनि।

ऋ० ६।६५।६

हे धनवाला! भरद्वाज के समान सेवा करने वाले मुझे धन दें।

इस सूक्त का ऋषि भरद्वाज है। इस मन्त्र में ''भरद्वाजवत्'' ऐसा प्रयोग मिलता है इसका अर्थ है ''भरद्वाज के समान''।

सूक्त का ऋषि भरद्वाज दूसरे

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पृष्ठ 5 का शेष-वेदों के ऋषि

भरद्वाज की उपमा देता है तो निश्चय ही ऋषि भरद्वाज से मन्त्रगत भरद्वाज का कोई सम्बन्ध नहीं है। भाष्यकार को इस उक्ति पर कुछ विचार प्रकट करना आवश्यक प्रतीत हुआ। इसलिये उन्होंने कहा कि-''भरद्वाजवदिति वचनादस्त्यन्योऽपि भरद्वाजः'' अर्थात् मन्त्र में ''भरद्वाजवत्'' ऐसा कहा है इसलिये दूसरा भी भरद्वाज है।

इसका प्रमाण देना आवश्यक समझ कर यह कहा कि-''तथा च ब्राह्मणम् प्राणो वै भरद्वाजवदिति'' ब्राह्मण ग्रन्थ में लिखा है कि प्राण ही भरद्वाज वाला है, अथवा भरद्वाज है।

यहाँ तक के विचार से यह सिद्ध होता है कि यजुर्वेद का भरद्वाज मन होता है और ऋग्वेद का भरद्वाज प्राण होता है।

तीसरी व्युत्पत्ति भी मिलता है जिससे कुछ भिन्न ही अर्थ निकलता है। जैसे-भरत्= देवानाम् पोषक वाजः= अन्नं यस्य सः। अर्थात्-जिसके समीप इन्द्रियों को पुष्ट करने वाला अन्न हो, वह भी भरद्वाज होता है। इस विवरण से मन्त्रों का संग्रह करने वाला कोई भी भरद्वाज कहा जा सकता है।

ऋग्वेद का दूसरा प्रमाण भी विचार करने के योग्य है। जैसे-

भरद्वाजेषु यजतो विभावा। ऋ० १।५९।७ अर्थात् विशेष रूप से प्रकाश करने वाली अग्नि को यज्ञों में सन्तुष्ट करना चाहिये। इस मन्त्र में ''भरद्वाजेषु'' सप्तमी विभक्ति के बहुवचन का रूप है। यहां निम्न प्रकार की व्युत्पत्ति उपलब्ध होती है। भरद्वाजेषु= पुष्टिकर हविर्ल-क्षणान्नवत्सु योगेषु'' अर्थ= ''पुष्टिकारक हविष्य रूप अन्न वाले यज्ञों में'' यहाँ विशेषण रूप से भरद्वाज शब्द दीखता है। इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है कि संज्ञा बराबर विशेष्य रूप में ही रहती है विशेषण रूप में नहीं। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी भी विशेष्य पद के गुण का प्रकाश करने के निमित्त ही विशेषण पद का योग होता है परन्तु भरद्वाज शब्द का जो अर्थ होता है उसकी संगति अवश्य होनी चाहिये। जैसे=''भरद्वाजेषुगृहेषु'' ''अन्न से परिपूर्ण घरों में'' इस वाक्य का अर्थ यही होगा। ''भरद्वाजेषु'' इस पद की व्युत्पत्ति भाष्य में निम्न प्रकार से मिलती है-''भरन्ति-पोषयन्ति भोक्तृनिति भरन्तः, तादृशा बाजा येषु तेषु'' ''यागेषु'' अर्थ= पुष्टिकारक अन्नों वाले यज्ञों में।

ऋग्वेद के एक तीसरे प्रमाण से इसी अर्थ की पुष्टि होती है। यहाँ भी भरद्वाज पद विशेषण ही सिद्ध होता है। जैसे= भरद्वाजायाश्विना हयन्ता। ऋ० १।११६।१८ अर्थः-भरद्वाजाय=संभ्रियमाणहविर्लक्षणान्नाय यजमानाय''-पुष्टि कारक हविष्य को धारण करने वाले यजमान के लिये।

इसी वेद के चौथे प्रमाण से भी यही अभिप्राय प्रकट होता है। जैसे= ''मर्त्येष्वा छर्दिर्यच्छवीतहव्याय सप्रथो भरद्वाजाय सप्रथः'' ऋ।१५।३। इस मन्त्र में अग्नि से प्रार्थना की गई कि-''मनुष्यों में जो हविष्य का होम करने वाला हो, तथा पुष्टिकारक अन्न से सम्पन्न हो, उसको घर मिलना चाहिये''।

इस मन्त्र में एक बहुत बड़ी विशेषता यह प्रतीत होती है कि ''भरद्वाजाय'' ओर ''वोतहव्याय'' ये दोनों ही पद विशेष्य और विशेषण दोनों के रूप में अर्थ का प्रकाश कर सकते हैं। जैसे-''भरद्वाजाय वीतहव्याय'' भी कह सकते हैं और ''वीतहव्याय भारद्वाजाय'' ऐसा भी कह सकते हैं। दोनों प्रकार से अर्थ युक्ति युक्त सिद्ध होंगे। इस प्रकार अर्थ होगा=''अन्न से सम्पन्न यज्ञ करने वाले'' अथवा ''यज्ञ करने वाले अन्न से सम्पन्न पुरुष''। उपर्युक्त विचारों से यदि ''भरद्वाज'' पद का अर्थ संग्रह किया जाए तो निम्न अर्थ सिद्ध होते हैं।

१. भरद्वाज-मन

२. भरद्वाज-प्राण

३. भरद्वाज-अन्नसंग्रहीता।

४. भरद्वाज-यज्ञ आदि का विशेषण पद और विशेष्य पद

५. भरद्वाज-ऋषि बृहस्पति का पुत्र

६. भरद्वाज-तारा।

भरद्वाज ऋषि को यहाँ ही छोड़ दीजिये और आगे कश्यप ऋषि को विचार का विषय बनाइये!

२. कश्यप

सबसे प्रथम कश्यप ऋषि का विचार हम अथर्व वेद के प्रमाण से प्रारम्भ करते हैं। अथर्व वेद में निम्न प्रकार से एक मन्त्र है-

कालः प्रजा असृजत कालो अग्ने प्रजापतिम्।
स्वयम्भू कश्यपः कालात् तपः कालादजायत।।
अ० १५।५३।१०

अर्थ-काल सर्व प्रथम प्रजापति को, अनन्तर प्रजाओं को, स्वयम्भू कश्यप को और तप को, उत्पन्न करता है।

इस मन्त्र में काल से कश्यप की उत्पत्ति का वर्णन पाया जाता है। अब प्रश्न होगा कि यह कश्यप क्या है।

तैत्तिरीयारण्यक में सूर्य के आठ नाम पाये जाते हैं-यथा-आरोगो भ्राजः पटरः स्वर्णरः ज्योतिष्मान् विभासः कश्यपः। इस प्रमाण से यह नाम सूर्य का सिद्ध होता हैं।

आचार्ययास्क ने कश्यप शब्द का निर्वचन निम्न प्रकार से किया है। ''कश्यपः पश्यको भवति, यत्सर्वं विपश्यति'' देखने वाला कश्यप होता है, जो सब कुछ विशेष रूप से देखता है। आचार्य यास्क का एक बिन्दु भी साभिप्राय होता है।

यहाँ उन्होंने दृश् धातु से कश्यप शब्द की उत्पत्ति मानी है। दृश्धातु का ही पश्य आदेश होता है। उसी का वर्ण विपर्यय से कश्यप बन जाता है। ऐसा ही आचार्य का अभिमत है।

अथर्ववेद का एक और मन्त्र भी हम उद्धृत करते हैं जिससे सूर्य की स्पष्ट प्रतिपत्ति होती है। यथा-

यत्ते चन्द्रं कश्यप रोचनावत् यत् संहितं पुष्कलम् चित्रभानु।
यस्मिन् सूर्या अर्पिता सप्त साकम।।

हे कश्यप! जो तेरा चम्द्रमा प्रकाश का पुञ्ज बना हुआ है। जिससे तुझमें सात किरणें एक साथ अर्पित की गई हैं।

चन्द्रमा में स्वतः प्रकाश नहीं है। किन्तु सूर्य के प्रकाश से ही वह प्रकाशित होता है। इसीलिये ''सुषुम्णः सूर्यरश्मिः चन्द्रमा'' ऐसा लेख भी पाया जाता है अर्थात् सूर्य की सुषुम्ण किरण से चन्द्रमा प्रकाशित होता है।

अथर्ववेद में इसी प्रकार के अन्य प्रमाण भी मिलते हैं, जिनसे इसी अर्थ की पुष्टि होती है।

अथर्ववेद से एक और भी प्रमाण उपस्थित किया जाता है। जिससे ''कश्यप'' का औषध अर्थ होता है। यथा-

अङ्गे अङ्गे लोम्नि यस्ते पर्वणि पर्वणि। यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीवर्हेण विश्वञ्चं-विवृहामसि।।२।३३।७

अर्थ=तेरे अङ्ग, अङ्ग, रोम, रोम तथा तेरे प्रत्येक जोड़ों में जो यक्ष्मा विद्यमान है, उसको हम लोग कश्यप की जड़ या पत्तों से दूर करते हैं।

इस मन्त्र में कश्यप के पत्तों से अथवा जड़ से यक्ष्मा रोग को दूर करने का उपदेश अथवा वर्णन पाया जाता है। इसलिये यहाँ कश्यप औषध है।

इस प्रसंग में इतनी ही ध्यान रखने की बात है कि सूर्य अथवा औषध आदि नाम वैदिक काल का है। ऋषि नाम उस काल के बाद का है।

वर्तमान ध्रुवतारा की परिक्रमा करने वाले सप्तर्षि मंडल में भी एक कश्यप तारा है। उन्हीं ताराओं में वसिष्ठ और अरुन्धती का भी सन्निवेश है। इसका भी वैदिक आधार होना चाहिये।

इस प्रकार कश्यप शब्द के चार अर्थ होते हैं।

१. कश्यप सूर्य

२. कश्यप औषध

३. कश्यप तारा

४. मारीच का पुत्र कश्यप ऋषि

३. गोतम

गोतम शब्द ऋग्वेद के मन्त्र में भिन्न-भिन्न कारकों के रूप में १७ स्थानों में पाया जाता है। अथर्ववेद के मन्त्रों में यह शब्द केवल तीन स्थानों में ही मिलता है। परन्तु सामवेद और यजुर्वेद के मन्त्रों के अन्दर गोतम शब्द नहीं मिलता है। किन्तु मन्त्रों के अन्दर की बात को छोड़कर, मन्त्रों के ऊपर छपे हुये ऋषियों के नामों में, ''गोतम'' शब्द चारों वेदों में मिलता है।

सर्वप्रथम ऋग्वेद का एक मन्त्र, उदाहरण रूप से हम उपस्थित करते हैं जो गोतम शब्द के अर्थ पर प्रकाश डालता है। **(क्रमशः)**

पृष्ठ 2 का शेष-कस्मै देवाय हविषा विधेम

तस्योत जायमानस्योल्ब आसीद्धिरण्ययः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।8।।

अर्थ-(अग्ने) पहले ही पहले, सृष्टि उत्पत्ति से पूर्व (वत्सम्) बालक रूप संसार को (जनयन्ती:) उत्पन्न करते हुए (आप:) जल धाराओं ने (वा तन्मात्राओं ने) (गर्भम्) बालक (रूप संसार) को (समैरयन्) यथावत् प्रकट किया, (उत) और (तस्य) उस (जायमानस्य) उत्पन्न होते हुए (बालक संसार) का (जरायु) (गर्भ की झिल्ली) (हिरण्यय:) तेजोमय परमात्मा (आसीत्) था। इस (कस्मै) सुख स्वरूप परमात्मा की (देवाय) श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति के लिए (हविषा) अति प्रेम से (विधेम) विशेष भक्ति किया करे।

भावार्थ-स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि जल ही जीवन है। चेतन प्राणियों की उत्पत्ति सर्वप्रथम जल में ही हुई है यह विज्ञान की भी मान्यता है! वेद का कथन है कि पहले ही पहले इस बालक रूप संसार को उत्पन्न करते हुए जलधाराओं ने बालक संसार को प्रकट किया है। इस उत्पन्न होते हुए बालक संसार का जरायु तेजस्वरूप परमात्मा ही था। ऐसे सुख स्वरूप परमात्मा की श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति के लिए हम अति प्रेम से उसकी विशेष भक्ति किया करे।

इस प्रकार इस पूरे सूक्त में 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' पद के द्वारा परमात्मा की विशेष भक्ति करने की प्रेरणा दी गई है। उसकी भक्ति से हमारे अन्दर श्रेष्ठ गुणों का विकास होगा और हम मुक्ति तक को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर में...

वैदिक वाणी का सामूहिक संगीतमय कीर्तन करके समस्त संगत को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह रात्रिकालीन वेद कथा का प्रवाह 18 फरवरी ऋषिबोधोत्सव तक निरन्तर चलता रहा।

19 फरवरी रविवार को प्रात: 9.00 बजे पंच कुंडीय यज्ञ के आयोजन के साथ मुख्य कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया। श्री सुरेश शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यह यज्ञ सम्पन्न किया गया। पं. मनोहर लाल आर्य, आचार्य महावीर मुमुक्षु जी, आचार्य उदयन जी विशेष रूप से यज्ञवेदी पर उपस्थित रहे। इस अवसर पर श्री सुरेश भगत जी, श्री वशिष्ठ जी, श्री अरुण रत्न जी, डा.वीरेन्द्र रत्न जी, श्री जितेन्द्र भगत जी, श्री ओम प्रकाश जी, श्री भारत भूषण जी, श्री अशोक शीतल जी, श्री उदय कुमार जी, श्री तरसेम सिंह लखौतरा जी, श्री हरि प्रकाश जी मुख्य यजमान बने।

यज्ञ के पश्चात श्री प्रेम कुमार जी महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कर-कमलों द्वारा ध्वजारोहण सम्पन्न किया गया व गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों द्वारा जयति ओ3म् ध्वज व्योम विहारी ध्वज गान गाया गया। तत्पश्चात स्वामी सदानन्द जी अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर जी की अध्यक्षता में ऋषि बोधोत्सव का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। श्री सुरेन्द्र आर्य, श्री राजेश अमर प्रेमी ने ऋषि महिमा पर बहुत ही सुन्दर भजन प्रस्तुत किये। आर्य समाज व ऋषि दयानन्द के कार्यों पर प्रकाश डाला। गुरुकुल करतारपुर के आचार्य उदयन जी ने धर्मान्तरण के दुष्परिणाम पर बहुत ही सुन्दर व मार्मिक ढंग से चर्चा की। श्री सुशील रिंकू जी पूर्व विधायक व श्री मोहिन्द्र भगत जी प्रवक्ता भारतीय जनता पार्टी भी इस अवसर पर विशेष रूप से पहुंचे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम कुमार जी ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की द्वितीय जन्म शताब्दी समारोह के क्रम में आयोजन होने वाले कार्यक्रमों की शृंखला में अक्तूबर के महीने में जालन्धर में एक पंजाब प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन आयोजित करने का निर्णय किया है। उन्होंने सभी से इस सम्मेलन को सफल करने हेतु अभी से तैयारियां करने का आह्वान किया। आर्य समाज के प्रधान श्री कमल आर्य जी ने सभा के इस निर्णय की बहुत सराहना की तथा इस सम्मेलन की शुरूआत करने के लिये आर्य समाज की ओर से ग्यारह हजार रुपये की राशि वेद प्रचार हेतु भेंट की। इस अवसर पर डा. बलविन्द्र शास्त्री जी दीनानगर, आचार्य उदयन जी करतारपुर तथा श्री सुदेश रत्न जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को उनकी आर्य समाज के प्रति सेवाओं के लिये विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्वर्गीय बाबू सरदारी लाल जी द्वारा स्वजीवन पर [illegible]

-कमल आर्य प्रधान, आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर

ईश्वर को कभी मत भूलो

ले.-पं. नन्दलाल निर्भय

जगदीश्वर का है, बड़ा निराला खेल।
उसके आगे धनी-बनी सब हो जाते है फेल।।
ईश्वर है निर्लेप, निरंजन, जन्म कभी ना लेता है।
माता-पिता, गुरु है सच्चा, नेताओं का नेता है।।
देवों का है देव, दयानिधि, सबसे बड़ा विजेता है।
कर्मों के अनुसार सभी को, जगदीश्वर फल देता है।।

अत्याचारी खुदगर्जों से कभी न करता मेल।
जगदीश्वर का है, बड़ा निराला खेल।।1।।
बिन हाथों के जगतपिता वह, काम निराले करता है।
न्यायकारी जगदीश निराला, नहीं किसी से डरता है।।
वैदिक धर्मी गुणवानों के, कष्ट दयामय हरता है।
बिन कानों के सुनता है वह, बिन पग ईश विचरता है।।

दुष्टों की नाकों में वह, देता है डाल नकेल।
जगदीश्वर का है, बड़ा निराला खेल।।2।।
सूरज, चांद, पृथ्वी, तारे, प्रभु ने अजब बनाए हैं।
पर्वत, गहरे सागर, देख सभी चकराए हैं।।
तरह-तरह के पशु-पक्षी हैं, सबके मन को भाए हैं।
कीट, पतंग बनाए अनगिनत, गिनती में ना आए हैं।।

तरह-तरह के वृक्ष बनाए, तरह-तरह की बेल।
जगदीश्वर का है, बड़ा निराला खेल।।3।।
अखिल विश्व उस कारीगर की, बड़ी निराली माया है।
शुभ कर्मों के कारण प्रभु ने, मानव हमें बनाया है।।
पावन वैदिक ज्ञान दिया है, भला-बुरा दर्शाया है।।
वे मानव है बड़े अभागे, प्रभु उपकार भुलाया है।

धूर्त, नास्तिक, दुष्कर्मों से, सब जाते हैं जेल।
जगदीश्वर का है, बड़ा निराला खेल।।4।।
अगर भला चाहो तुम अपना, प्रभु को कभी न भूलो तुम।
धन-दौलत, ऊंचे पद पाकर, हे मित्रो! मत फूलो तुम।।
ईश्वर भक्त बनो तुम सच्चे, बनो तपस्वी-त्यागी तुम।
राम, कृष्ण, ऋषि दयानन्द से, बनो सभी वैरागी तुम।।

फेल एक दिन हो जाएगी, जीवन रूपी रेल।
जगदीश्वर का है, बड़ा निराला खेल।।5।।
अब भी अगर नहीं जागोगे, भारी कष्ट उठाओगे।
समय निकल जाएगा, पगलो! फिर पीछे पछताओगे।।
अबला, दीन, अनाथों की अब, करो रात-दिन सेवा तुम।
''नन्दलाल'' सेवा करके, पाओगे अद्‌भुत मेवा तुम।।
समझो, क्यों तुम, मूर्खता से कष्ट रहे हो झेल।
जगदीश्वर का है, बड़ा निराला खेल।।6।।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के वरिष्ठ उप प्रधान स्वर्गीय श्री सरदारी लाल आर्य रत्न जी की प्रथम पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि स्वरूप उनके परिवार ने उनके जीवन पर एक पुस्तक प्रकाशित करवाई जिसका विमोचन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर के प्रधान श्री कमल आर्य जी, सभा मंत्री एवं आर्य समाज भार्गव नगर के कोषाध्यक्ष श्री सुदेश आर्य जी सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी को दोशाला भेंट कर सम्मानित करते हुये। चित्र में उनके साथ सभा महामंत्री श्री प्रेम कुमार जी, पं.मनोहर लाल जी, चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट, सभा मंत्री श्री रणजीत आर्य जी। जबकि दूसरे चित्र में पुस्तक का विमोचन करते हुये सभा अधिकारी एवं आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर के अधिकारी एवं सदस्यगण।

आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर में ऋषि बोधोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया

आर्य समाज वेद मंदिर महर्षि दयानन्द बाजार भार्गव नगर जालन्धर में महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व ऋषि बोधोत्सव 13 फरवरी से 19 फरवरी 2023 तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम कुमार जी एवं कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी ध्वजारोहण करते हुये। चित्र दो में आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर की तरफ से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम कुमार जी एवं कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी को 11,000 रुपये का चैक वेद प्रचारार्थ भेंट करते हुये संरक्षक पं. मनोहर लाल जी, कोषाध्यक्ष श्री सुदेश कुमार जी एवं अन्य। चित्र तीन में स्वर्गीय श्री सरदारी लाल आर्य रत्न जी की प्रथम पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि स्वरूप उनके परिवार ने उनके जीवन पर एक पुस्तक प्रकाशित करवाई जिसका विमोचन करते हुये जबकि चित्र चार में सभामहामंत्री श्री प्रेम कुमार जी सम्बोधित करते हुये।

आर्य समाज वेद मंदिर महर्षि दयानन्द बाजार भार्गव नगर जालन्धर में महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व ऋषि बोधोत्सव 13 फरवरी से 19 फरवरी 2023 तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस उपलक्ष्य में 13 फरवरी से 18 फरवरी तक वेदकथा का आयोजन किया गया। प्रतिदिन सायंकाल का यज्ञ पंडित मनोहर लाल जी द्वारा संचालित होता रहा। श्री सुरेन्द्र आर्य जी व श्री राजेश अमर प्रेमी जी के बड़े सुन्दर मधुर भजन श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करते रहे। आचार्य महावीर जी मुमुक्षु अपने पवित्र मुखारबिन्द से वेद की अमृत वर्षा करने के साथ साथ समाज में धर्म के नाम पर आ रही कुरीतियों के प्रति भी जागरूक करते रहे। 15 फरवरी को सुबह 10.00 बजे आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर के निर्देशन में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्मोत्सव पर आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर व आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकेंडरी स्कूल बस्ती नौ जालन्धर के सहयोग से संयुक्त समारोह के अवसर पर ज्ञान ज्योति पर्व का आयोजन किया गया जिसमें श्री सुरेश शास्त्री जी ने बड़े सुन्दर ढंग से हवन यज्ञ करवाया। इस हवन यज्ञ में श्री कमल आर्य मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे। स्कूल स्टाफ तथा स्कूल प्रबन्धक कमेटी के प्रधान राज कुमार, मैनेजर श्री सुदेश कुमार, श्री रमेश लाल जी तथा अन्य गणमान्य महानुभाव विशेष रूप से सम्मलित हुये। इस अवसर पर श्री राजेश अमर प्रेमी जी के भजन व वैदिक प्रवक्ता श्री महावीर मुमुक्षु जी का विशेष उद्बोधन हुआ।

रात्रि को आर्य समाज मंदिर के कार्यक्रम में पं. रमेश जी व पं.मनोहर लाल जी के साथ साथ श्री सुरेन्द्र आर्य जी, श्री राजेश अमर प्रेमी जी के भजनों के अतिरिक्त आचार्य महावीर मुमुक्षु जी ने महर्षि दयानन्द जी की समाज को देन के विषय पर बहुत ही सुन्दर व्याख्यान दिया। 16 फरवरी को बाबू श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न जी की पुण्य स्मृति में भजन संध्या का आयोजन किया गया। श्री सुरेन्द्र आर्य जी, श्री राजेश अमरप्रेमी जी के भजनों के अतिरिक्त पं.रमेश आर्य जी ने वैदिक जपुजी (शेष पृष्ठ सात पर)

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित।
सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org